"धर्म के मार्ग से ही मानवता को मिलेगा हल"

सांची विश्वविद्यालय का चौथा धर्म-धम्म सम्मेलन

शुक्रवार को विज्ञान भवन में समापन समारोह आयोजित

"धर्म और राजनीति" विषय पर सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित चौथे अंतरराष्ट्रीय धर्म-धम्म सम्मेलन में चीनी बुद्ध दर्शन, हिंदुत्व और एकात्म और अन्य कई महत्वपूर्ण विषयों पर विचार मंथन हुआ। दूसरे दिन आयोजित चौथे सत्र में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और पूर्व सांसद प्रो. रामजी सिंह ने कहा किधर्म के रास्ते से ही मानवता को हर परेशानी का हल मिल सकेगा। उन्होंने कहा कि धर्म का कर्तव्य है कि वो गांव, राष्ट्र और विश्व का निर्माण करे। और इसके लिए हमें ऐसे तरीके ढूंढने होंगे जिससे विश्व एक समुदाय के रूप में सामने आ सके।

उन्होंने कहा कि धर्म और राज व्यवस्था के संतुलन को साधा जा सकता है। उन्होंने बताया कि धर्म का अर्थ दर्शन तथा पौराणिकता का सामंजस्य है। उन्होंने वर्तमान राजनीति में आए भ्रष्टाचार, पाखंड इत्यादि का भी उल्लेख किया। उन्होंने गोपाल कृष्ण गोखले के कथन उल्लेख किया जिसमें गोखले ने कहा था कि "राजनीति का आध्यात्मिकरण किया जाना चाहिए तभी राम राज्य की स्थापना संभव है" जिसका की आधार नैतिकता होगी। उनका कहना था कि वर्तमान में तो राजनीति और धर्म को अलग-अलग करके देखा जाता है।

पहले समानांतर सत्र में प्रो. गौतम पटेल ने हिंदुत्व की विभिन्न परिभाषाओं को उल्लेखित किया। उन्होंने बताया कि हिंदु शब्द का एक अर्थ यह भी होता है कि ऐसा व्यक्ति जो घृणा से रहित हो, सभी किस्म की बुराइयों से दूर रहता हो और जिसका प्रत्येक कार्य उसके अच्छे मन्तव्य को ज़ाहिर करता है।

इसी सत्र के दौरान शंघाई विश्वविद्यालय,चीनकी प्रोफेसर हेयान शेन ने बताया कि चीनी बुद्ध दर्शन में धर्म को तीन विभिन्न श्रेणीयों में बांटा गया है। उन्होंने कहा कि यही तीन श्रेणियां चीनी बौद्ध दर्शन के तीन अलग-अलग सत्य के सिद्धांत हैं। उन्होंने कहा कि चीनी बौद्ध दर्शन के अनुसार धर्म को सूक्ष्म बताया गया है, और कई स्थानों पर इसी धर्म को मस्तिष्क से भी दर्शाया गया है। धर्म और राजनीति पर नई दिल्ली के शांतिगिरि आश्रम के स्वामी पद्मप्रकाश तपस्वी ने कहा कि धर्म का अर्थ कर्म का अभ्यास है। उन्होंने कहा कि धर्म किसी भी व्यक्ति को सही और गलत के मार्ग के बीच स्पष्टता दर्शाता है और यही न्याय की स्थापना करता है।

ऑस्ट्रेलिया के सिडनी विश्वविद्यालय के प्रो. ब्रिखा नासोराइया ने इसी सत्र में बताया कि गुरु-शिष्य परंपरा ने सदैव से ही मनुष्य को प्रभावित किया है और मार्ग दिखाया। उन्होंने कहा कि इसी तरह से मनुष्य अपने पूर्वजों से सीखता आया है। प्रो. ब्रिखा का कहना था कि एकात्मकता और एकीकरण की व्यवहारिक प्रक्रिया ही मनुष्य को आध्यात्मिक अनुशासन सिखाती है।

पुणे के शारदा समाचार पत्र के संपादक श्री वसंत गाडगिल ने कहा कि सभी शास्त्रों का आधार सभी का कल्याण है। उनका कहना था कि वर्तमान में मनुष्य ने धर्म के व्यवहारिक पहलू को खो दिया है इसी वजह से सभी प्रकार का प्रदूषण हो रहा है।

21 अक्टूबर कोमध्य प्रदेश विज्ञान एवं तकनीकि परिषद(विज्ञान भवन) के सभागार में इस चौथे धर्म-धम्म सम्मेलन का अंतिम और समापन सत्र होगा। समापन सत्रकी अध्यक्षता मध्य प्रदेश के महामहिम राज्यपाल प्रो. ओम प्रकाश कोहली करेंगे। मुख्यमंत्री माननीय शिवराज सिंह चौहान मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथि के तौर पर केंद्रीय संस्कृति मंत्री डॉ महेश शर्मा एवं अमेरिकन वैदिक अध्ययन संस्थान के निदेशक वेदाचार्य डेविड फ्रॉले सम्मिलित होंगे। समापन सत्र सुबह 11 बजे आयोजित है। अंतिम दिन समानांतर सत्र में इटली में भारत के पूर्व राजदूत श्री बसंत गुप्ता भी सम्मिलित होंगे।

इस धर्म-धम्म सम्मेलन में शामिल होने के लिए धर्म, राज व्यवस्था के विशेषज्ञ, शिक्षाविद एवं शोधकर्ता अमेरिका, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया, चीन, कोरिया, थाइलैंड और श्रीलंका से सम्मिलित होने पहुंचे हैं। इनके अलावा बड़ी संख्या में देश के विभिन्न राज्यों से भी शिक्षाविद सम्मिलित हो रहे हैं।

धर्म and POLITY
॥ धर्मो रक्षति रक्षितः॥